इत दोए पहर पूरन भए, हुआ तीसरे का अमल जब ।
तिनकी बीतक कहत हों, सुनियो सेवा की विध तब ॥१०१॥

इतने में दूसरे पहर का समय व्यतीत हो गया और तीसरे पहर का समय हो गया । अब तीसरे पहर में मोमिनों ने श्री जी की जैसी सेवा की, उसे सुनिए ।

महामत कहे ए साथ जी, ए बात बड़ी बुजरक ।
एक जरा मैं न कह सकों, लाल कहया गजे माफक ॥१०२॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! यह बड़े महत्व की बात है । इस जागनी लीला में एक तिनके का भी वर्णन नहीं किया जा सकता । आप श्री महामति सरूप श्री प्राणनाथ जी लालदास जी के तन में बैठकर कहलवा रहे हैं ।

(प्रकरण ६५, चौपाई ३८९५)

तीसरा पहर

अब कहूं तीसरे पहर की, बीतक जो सैंयन ।
सो तुम सुनियो नीके कर, दिल के रे कानन ॥१॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! अब यह तीसरा पहर जो दोपहर १२ से ३ बजे का होता है । उस समय सुन्दरसाथ व्यस्त रह कर कैसे सेवा करते हैं, उस बीतक को बड़े ध्यान से दिल के कानों से सुनिए ।

चरना लेके आइया, प्रेमदास पहिनावन ।
नन्दराम पीछे खड़ा, ले गोटा कनढपी खलीतन ॥२॥

प्रेमदास जी श्री जी के सिर पर बांधने के लिए रेशमी कपड़ा ले कर आते हैं एवं नन्द राम सिरहाने की ओर गोटा, कनढपी थैली में लेकर खड़ा है । आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी पलंग पर लेट गए। तीसरे पहर की सेवा करने वाले सेवा में हाजिर होते हैं ।

पिउ पौढ़े पलंग पर, सैयां सेवन को सनमुख ।
मीठी बात रसना सों करें, देत निजधाम के सुख ॥३॥

आप श्री जी लेटे-लेटे रसभरी मीठी रसना के साथ बातें करते हैं और सुन्दरसाथ को परमधाम के सुख याद कराते हैं ।

Nijanand App

सेवा अंग परस की, वीरो आन करत ।
सैयां चरनों लाग के, मंदिर अपने फिरत ॥४॥

वीरो बाई इस समय आकर चरण दबाने की सेवा में हाजिर होती है। जो सुन्दरसाथ दूसरे पहर की सेवा में हाजिर थे, वह अब प्रणाम कर अपने-अपने स्थान पर वापिस जाते हैं।

जीजी सिर आगे धरें, श्री राज मारो टपले ।
पौढ़न बखत पलंग पर, इन समें आन पहुंचे ॥५॥

जीजी बाई आकर श्री जी के सामने अपना सिर रख देती हैं। आप श्री जी उसके सिर पर धीरे-धीरे चपत लगा देते हैं। वह पौढ़ने के वक्त दोपहर के समय अवश्य पहुंच जाती हैं।

इन समें राधाबाई, श्री राज के पकड़े हाथ ।
सिर को खुजलावने, बैटे सेज सेवा के साथ ॥६॥

इस समय राधा बाई आती है और श्री जी का हाथ पकड़ कर अपने सिर को खुजलवाती है। वह भी सेज सेवा के लिए आकर बैट जाती है।

गुलजी और अगरदास, आवत पांव दाबन ।
इन सेवा मिने ये, रहते थे मगन ॥७॥

गुल जी और अगरदास पैर दबाने के लिए आते हैं। यह दोनों इसी सेवा को मग्न होकर करते हैं।

मयाराम इत आए के, बानी सुनावत धाम ।
श्री राज राजी होए के, सब पूरें मनोरथ काम ॥८॥

मैयाराम जी इस समय आकर परमधाम की वाणी सुनाने की सेवा करते हैं। श्री जी इस सेवा से प्रसन्न होकर उसकी मनोकामना पूरी करते हैं।

तमूरा में तांत सों, गावें जगन्नाथ जुगत ।
धाम बरनन सुनत हैं, पौढ़ने के बखत ॥९॥

जगन्नाथ मीठे स्वर में तंबूरे के साथ धाम वर्णन की वाणी अर्थात परमधाम की लीलाओं का वृत्तान्त गाकर सुनाने की सेवा करते हैं। श्री जी बड़े भाव से सुनते हैं।

गजपत गहरा पन सों, गरजत हैं मुख बान ।
साखी कहवे साख को, ले दरद खड़ा ईमान ॥१०॥

गजपत भाई अपने गम्भीर स्वर में वाणी गाकर सुनाते हैं। साक्षी के लिए बीच-बीच में संतों की वाणी की चौपाईयां बोलते हैं। उसके द्वारा गाई गई वाणी हृदय में पीड़ा, परमधाम के प्रति प्रेम एवं विश्वास पैदा करती है।

Nijanand App

समय सब पौढ़न के, रिझावत हैं राज ।
अखंड बानी धाम की, जाके गाए होत सब काज ।।११।

सब सुन्दरसाथ श्री जी को विश्राम के समय, रिझाने के लिए परमधाम की अखंड वाणी का गायन करते हैं, जिस वाणी के गाने से सब मनोकामना पूरी होती हैं ।

गजपत चरने राज के, तन मन सौंप्या चित ।
कुरबान हुआ श्री राज पर, पीछे कछू न रख्या वित्त ।।१२।।

गजपत भाई ने श्री जी के चरणों में अपना तन-मन समर्पित कर दिया है । यहां तक कि उसने अपने आप को अर्पित कर कुछ भी सम्पत्ति अपने पास नहीं रखी ।

चन्द्रावली रिझावत, गाए के पंजाब के बचन ।
दरद उपजावे दिल को, स्याबास कहिए तिन ।।१३।।

चन्द्रावली बहन पंजाबी भाषा में वाणी गाकर श्री जी को प्रसन्न करती हैं । दिल में दर्द उपजाने वाली वाणी सुनाती हैं, श्री जी शाबाश कह कर उसकी सराहना करते हैं ।

नन्दू नित दोए बखत, गावत आगे पलंग के ।
तब लों तंबूरा बजावत, जोलों बारी वाले न पहुंचे ।।१४।।

नन्दू भाई श्री जी की सेवा में पहुंच कर प्रतिदिन सेज सेवा के समय दोनों वक्त वाणी गायन करते हैं । वह तब तक तंबूरा बजाते रहते थे, जब तक गाने वाली मंडली के सुन्दरसाथ नहीं आ जाते ।

बदले आया गावने, अपने साथ संगी ले ।
संभु स्वर पूरत, और सन्त दास सेवे ।।१५।।

शेखबदल अपने साथियों को संग लेकर गाने के लिए हाजिर होता है । उनकी मंडली में स्वर अलापने की सेवा शम्भू और संतदास करते हैं ।

बखतावर अमृत कुण्डली, सम्पत सेवे सनेह ।
गावत हैं अत हेतसों, श्री राज रिझावें ।।१६।।

इस मंडली में शामिल होकर बखतावर, अमृत, कुण्डली और सम्पत भाई बड़े प्रेम से वाणी गाकर बड़े प्यार से अपने धनी धाम को रिझाते हैं ।

Nijanand App

बानी मेरे पीऊ की, गावत अति रसाल ।
सुनते सुख उपजे, होत दिल खुसाल ॥१७॥

इस मंडली वाले साथी अपने धाम धनी की वाणी रसीले मधुर स्वर में अति आनन्दित होकर गायन करते हैं । इसको सुनकर आत्मा को सुख मिलता है और मन प्रसन्न हो जाता है ।

साथ फेरे सब अपनो, इत बानी सुनन का दाव ।
श्री राज सुने सनेह सों, दिल में बड़ी चाव ॥१८॥

वाणी गायन करने वाले सुन्दरसाथ अपनी-अपनी वारी (मंडली) में गाने के लिए आते हैं । इस पहर में परमधाम के सुख देने वाली वाणी सुनने को मिलती है । श्री जी बड़े चाव से वाणी को सुनते हैं ।

और भी साथ सुनत हैं, जान धाम धनी सों नेह ।
प्यार करें पिउ तिन सों, राखत बड़ा सनेह ॥१९॥

श्री प्राणनाथ जी को ही अपना धाम का धनी मान कर सुन्दरसाथ वाणी सुनने आते हैं । श्री जी भी उनको बहुत प्यार करते हैं ।

अब कहों गावन की, जो बारी में गावें ।
फिरती फिरती आवत, गाए के रिझावें ॥२०॥

अब बारी वाली मंडलियों के नाम कहते हैं, जो अपनी-अपनी वारी में मंडली के साथ उपस्थित होते हैं और गाकर श्री जी को रिझाते हैं ।

वारी में गावत हैं, चौदह आवत फिरती ।
कलाम वहदानियत के, वहीयां जो उतरी ॥२१॥

बारी में वाणी गाने वाली चौदह मंडलियां हैं जो अपनी-अपनी वारी पर आकर वाणी गायन करती हैं। यह अद्वैत अखंड परमधाम की वाणी है, जो श्री प्राणनाथ जी के मुख से अवतरित हुई है ।

ये कलाम रब्बानी, जो सुने रसूल अलेहु सलाम ।
तीस हजार जाहिर किए, तीस हजार जो लिखे कलाम ॥२२॥

ये वही अक्षरातीत पारब्रह्म की वाणी है, जिसको मयराज (दर्शन) के वक्त हजरत मुहम्मद साहब ने स्वयं श्री राजजी महाराज के मुख से सुना था । उन ९० हजार शब्दों में से ३० हजार शरियत कर्मकांड के महंमद साहब ने कुरान में जाहिर किए और हकीकत के ३० हजार शब्दों को इशारों में लिखा ।

Nijanand App

और तीस हजार कानों सुने, पर चढ़े नहीं फुरमान ।
सो हरफ सिफायत के, जो मुहम्मद सुने कान ॥२३॥

जो तीस हजार शब्द महंमद साहब ने सुने तो थे पर कुरान में लिखने का हुकम नहीं था, वे शब्द ब्रह्मसृष्टियों की महिमा के थे । जिन्हें कयामत के समय खुद इमाम मेंहदी साहिब ने आकर जाहिर करना था ।

सो ए कलाम इत आए के, कहे वास्ते पहिचान ।
ए दावत कयामत की, ल्यावे खलक ईमान ॥२४॥

वही शब्द जो हकीकत और मारफत के थे अब ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के मुखारबिन्द से कुलजम सरूप के रूप में उतरे हैं । उन्होंने इन वचनों को आत्मा और पारब्रह्म की पहचान कराने के लिए कहा।

जिन बानी गाए से, होत है दीदार हक ।
ए सिफत महम्मद की, होत है इनसे बुजरक ॥२५॥

कयामत के समय जागनी का यह निमन्त्रण उस पारब्रह्म के प्रति दृढ़ विश्वास उत्पन्न करने के लिए दिया । इस वाणी के गायन करने से पारब्रह्म अक्षरातीत के दर्शन होते हैं । इस वाणी से महंमद साहिब के हकी स्वरूप श्री प्राणनाथ जी की श्रेष्ठता व महिमा सिद्ध होती है ।

ए आठों पहर में, गावत समें समें ।
एक प्रात मध्यान को, गावत हैं चित से ॥२६॥

आठों पहर के अंदर सुन्दरसाथ समय-समय पर टोलियां बनाकर वाणी गाते हैं । प्रातःकाल और दोपहर में सुन्दरसाथ बड़े भाव के साथ वाणी गाकर श्री जी को रिझाते हैं ।

और समय चितवनी के, जब रहे दिन घड़ी चार ।
और संझा समें, मोमिन करें विचार ॥२७॥

परमधाम की चितवनी के समय जब चार घड़ी दिन बाकी रह जाता है अर्थात् सायं के साढ़े चार बजे होते हैं तो उस समय वाणी गायन होता है । सायंकाल जब सुन्दरसाथ ब्रह्मसृष्टियां आपस में चर्चा विचार करती हैं तब भी गाने वाली टोलियां गायन करती हैं ।

और समें पोढ़न के, जब रात जाए पहर दोए ।
तब गावने बैठत है, ताके नाम कहत हों सोए ॥२८॥

श्री जी के शयन के समय जब रात को दो पहर रात्रि व्यतीत हो जाती है तब रात्रि १२ बजे से टोलियां वाणी गाने के लिए बैठती हैं, उन टोलियों में गाने वालों के नाम कहते हैं ।

Nijanand App

एक बारी बदले की, तहां संग संभु गावन हार ।
कबहुंक थानू बैटत, करे सन्तदास मनुहार ॥२९॥

एक टोली शेखबदल की होती है, जिसमें शंभु भाई प्रमुख गायक होते हैं । उनके साथ कभी थानू, कभी संतदास गाने में शामिल रहते हैं । ये सब वाणी गाकर श्री जी को भली प्रकार प्रसन्न करते हैं ।

और सामिल गावहीं, ए जो बखतावर ।
अमृत कुण्डली गावहीं, बानी सुन्दर वर ॥३०॥

इसी टोली में बख्तावर शामिल होकर गाते हैं । अमृत, कुण्डली भी श्री राज जी महाराज की अखण्ड वाणी का गायन करते हैं ।

और दूसरी बारी मिने, मना और रतनी ।
असाई भागो धन बाई, सब वारी रिझावे अपनी ॥३१॥

दूसरी मण्डली में मना बाई और रतनी बाई प्रमुख हैं । असाई, भागो और धनबाई ये सब अपनी बारी में वाणी का गायन करने की सेवा करती हैं और अपने धाम धनी को रिझाती हैं ।

और तीसरी बारी मिने, दयाली गावें ।
और खिमोती दमोती, जसिया भी आवे ॥३२॥

तीसरी बारी में दयाली के साथ खिमोती, दिमोती और जसिया भी गाने की सेवा में आते हैं ।

चौथी में लछो आवत, संग असाई मना ।
और सब हाजिर रहे, जान राज अपना ॥३३॥

चौथी मण्डली में लच्छों के संग असाई, मन्ना और सब, श्री प्राणनाथ जी ही हमारे धाम के धनी हैं, इस भाव से आकर रिझाती हैं ।

जहूरा गौरी बारी मिने, गावत बाई प्रेम ।
खेम बाई सामिल रहें, गुलो गावें लिए नेम ॥३४॥

जहूरा और गौरी की मण्डली में प्रेमबाई, खेमबाई सेवा में शामिल होती हैं और गुल्लो बेगम अपने नियम से आकर गाती हैं ।

सब की बारी मिने, चन्द्रावली देत मदत ।
श्री राज रीझत तिन पर, गावने के बखत ॥३५॥

सबकी मण्डलियों में चंद्रावली सहायता के लिए आती हैं । इसके गाने के समय में श्री राज जी महाराज बहुत प्रसन्न होते हैं ।

Nijanand App

जीजी की बारी मिने, गावत है अगरी।
बड़ी जीजी सामिल रहें, और गावत हैं मथुरी ॥३६॥

जीजी की बारी में अगरी शामिल होती हैं और बड़ी जीजी भी इस सेवा में शामिल रहती हैं। मथुरी भी इनके साथ मिलकर गाती हैं और सेवा में शामिल होती हैं।

करमेती के सामिल, गावें हरखों बाई गौर।
लालो रतो लड़ेती, ए गावत हैं जोर ॥३७॥

करमेती की मण्डली में हरखों बाई, गौर बाई, लालो, रतो, लड़ेती ये सब मिलकर गाने की सेवा में शामिल होती हैं। इनकी मण्डली बड़े जोर-शोर से गाती है।

और लछो ललिता, और सुआ संता द्रोपती।
केसर लखमीं आवत, राज बड़ी रीझ करी ॥३८॥

और लच्छो, ललिता, सुआ, संता, द्रोपदी, केसर, लखमी भी इस बारी में इस मण्डली में गाकर धनी को रिझाने के लिए आती हैं।

आठमी बारी मिने, हर कुंअर सिरदार।
पांखड़ी सूजा कासी, गावत खबरदार ॥३९॥

आठवीं मण्डली में हरकुंवर सिरदार होते हैं। इनकी मण्डली में पांखड़ी, सूजा, काशी बड़ी होशियारी के साथ गाकर धनी को रिझाते हैं।

नवमी जसा की बारी मिने, गावें भीगू चंगाई।
वीरो किसनी सामिल, ए गावने को आई ॥४०॥

नौंवी जसिया की मण्डली में भीगू, चंगाई,वीरो, किश्नी शामिल होकर गाने के लिए आती हैं और ये सेवा करके धनी को रिझाती हैं।

भागीरथी के भाग में, गावत हैं मोहन दे।
लड़ेती लछो सुआ रहे, पटेलन जेंनती के ॥४१॥

भागीरथी की मण्डली में मोहन दे, लड़ेती, लच्छो, पटेलन, जयन्ती गाने की सेवा में शामिल होती हैं और अपने धनी को रिझाती हैं।

Nijanand App

और सन्ता गावें सनेह सों, लाली लालो इनमें ।
अपनी बारी गावहीं, रहे खुसाली सें ॥४२॥

और संता अपनी मण्डली में बड़े स्नेह के साथ गाती हैं । इनकी मण्डली में लाली, लालो मिलकर गाती हैं और बड़े प्रसन्नचित्त से गाकर अपने धनी को रिझाती हैं ।

अग्यारमी भानी की बारी मिने, गावे हिमोती गोमा ।
रामबाई तहां गावत, हक आवत करें उपमा ॥४३॥

ग्यारहवीं भानी की मंडली में हिमोती, गोमा, रामबाई ऐसी मीठी रसना में गाकर धनी को रिझाती हैं कि धनी भी इनकी प्रशंसा करते हैं ।

खरगो खिमोती रहे, ए गावे अल्ला कलाम ।
श्री राज रीझ के कहत हैं, इन्हें देओ बैठने का ठाम ॥४४॥

खरगो, खिमोती अपनी मंडली में कुराने पाक की आयतें गाकर धनी को रिझाती हैं । स्वामी जी खुश होकर कहते हैं, इन्हें बैठने की जगह दो ।

खेमबाई की बारी मिने, गावें साहो हंसों जादी ।
करमाबाई आवत, रीझ राजें वारी दी ॥४५॥

खेमबाई की मंडली में साहो, हंसो, जादी, करमाबाई शामिल होती हैं और वाणी गाकर धनी को रिझाती हैं । धनी जी रीझ कर पहले उनकी मंडली को समय देते हैं ।

गुलो की बारी मिने, गावे जान मानवंती ।
दयंती मनिया गौरबाई, गावत सुख देतीं ॥४६॥

गुलो की मंडली में मानवंती, दयंती, मनिया, गौरबाई यह सब मिलकर ऐसे स्वरों में गाकर अपने धनी को रिझाती हैं कि आनन्द आ जाता है ।

दो पहर की बारी मिने, गावत हैं सिवराम ।
संझा समें भी सामिल, ए पावत विसराम ॥४७॥

दोपहर की बारी में शिवराम भी गाते हैं, संध्या समय भी गाने की मंडली में शामिल होते हैं और गाने की सेवा करके ही इनको शान्ति प्राप्त होती है ।

Nijanand App

सदानन्दन गावहीं, भाई जो सिवराम ।
और अमृत कुण्डली, और बखतावर को काम ॥४८॥

सदानन्द की मंडली में शिवराम, अमृत, कुण्डली, बखतावर यह सब मिलकर वाणी गाने की सेवा करते हैं और धनी को रिझाते हैं ।

बनमाली की बारी मिनें, गावे दो पहर संझा समें ।
संग सन्ता प्रेम जीजली, राम बाई सूरत से ॥४९॥

बनमाली की मंडली दोपहर को भी गाने की सेवा करती है और संध्या समय भी गाती है । इनके संग सन्ता, प्रेम, जीजली, राम बाई, सूरत की यह मंडली भी मिल कर यह सब गाने की सेवा करते हैं और धनी को रिझाते हैं ।

ए बारी वाले गावहीं, आठ पहर रात दिन ।
एह नित सुनत है, खास गिरोह मोमिन ॥५०॥

यह सब १४ मन्डलियां अपनी-अपनी बारी के समय आठों पहर दिन रात गाने की सेवा कर अपने धनी को रिझाते हैं और खास मोमिन जो ब्रह्मसृष्टि हैं वह जब वाणी गायन होती है तो अवश्य सुनते हैं।

और आवत हैं बहुत, मढ़े फिरत दोऊ कान ।
बिना अंकूरे क्या करे, पावें ना सुख सुभान ॥५१॥

और भी बहुत लोग वाणी सुनने के लिए तो आते हैं परन्तु अंदर अंकूर परमधाम का न होने की वजह से दोनों कान बन्द हैं उनको वाणी की समझ नहीं आती, इसलिए उनको सुख प्राप्त नहीं होता ।

नातो बुरा न चाहे कोई आपको, पर ना सुनने ताकत ।
लज्जत तिनको न आवहीं, तो क्यों कर बैठे तित ॥५२॥

नहीं तो इस संसार में कोई भी मानव अपना बुरा नहीं चाहता पर इनके जीव के अंदर वाणी सुनने का दम ही नहीं है । इनको वाणी में आनन्द ही नहीं आता, इसलिए वह बैठते ही नहीं हैं ।

ताबे रहे सैतान के, सो खेंचे अपनी तरफ ।
दिखावे दुनीय को, तो पावे ना एक हरफ ॥५३॥

ऐसे लोग जो सदा शैतान अबलीस के आधीन रहते हैं, वह तो संसारी विकारों की ओर ही खींचता हैं और वो दुनियां के लड़ाई झगड़ों में फंसा देता है इसीलिए वह वाणी का एक शब्द ही नहीं सुन पाते।

Nijanand App

जो कदी कानों सुने, काहू की सोहोबत ।
पर दिल की आंखें फूटियां, ताथें न पावे लज्जत ॥५४॥

और यदि किसी की सोहोबत में आकर वाणी को सुन भी लेते हैं, पर अंदर की आंखें फूटी अर्थात् आत्म जाग्रत न होने के कारण से उनको लज्जत नहीं आती ।

ए जिनके ताले लिखे, सो गावे सुने सुकन ।
जोस फिरे जबरूत लों, नजर लाहूत में मोमिन ॥५५॥

यह अखंड परमधाम की वाणी वही गाते और सुनते हैं जिनकी निसबत अखंड परमधाम से है । इस वाणी के गाने सुनने से मोमिनों की सुरता अखंड परमधाम में घूमती है और मोमिनों की नजर परमधाम में अपने धनी के चरणों में रहती है ।

तिनके वास्ते खेल को, बनाया खालक ।
रसूल को उन इनों पर, भेज दिया है हक ॥५६॥

इन मोमिनों के वास्ते ही इनके धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी ने अक्षर को हुकम देकर ये खेल बनवाया है और रसूल महम्मद साहब को पारब्रह्म अक्षरातीत ने इन मोमिनों के वास्ते ही पैगाम देकर भेजा है ।

सुने न कुरान को, इनके कहे न कान ।
कलाम रब्बानी उतरे, वास्ते मोमिनों पहिचान ॥५७॥

इसलिए दुनियां वालों ने कुरान में जो इमाम मेंहदी साहिब के आने तथा कयामत के जाहेर होने के सात निशानों की बातें लिखी थीं इन्होंने कभी सुनी ही नहीं । इनके वो कान ही नहीं हैं जो अर्श की वाणी को सुनें । कलामे रब्बानी (कुराने पाक) मोमिनों की पहचान कराने के वास्ते ही अक्षरातीत पारब्रह्म ने लिखकर भेजा है ।

सो वानी सिफायत की, किन वास्ते उतरी ।
हक मेहर करत हैं, सो मोमिनों दिल धरी ॥५८॥

उस कुरान में सब मोमिनों की महिमा की ही बीतक है । श्री राज जी महाराज ने सब मोमिनों के वास्ते ही मेहर की है जो कुरान उतारा है, इसलिए मोमिनों ने इस वाणी को सुनकर अपनी ही बीतक समझ कर दिल में ले लिया है अर्थात् उस पर अमल किया है ।

पांचों चीज बका से, उतरी वास्ते मोमिन ।
जबराईल जोस धनी का, करत सदा रोसन ॥५९॥

अक्षरातीत पारब्रह्म श्री राज जी महाराज ने मोमिनों के वास्ते ही अपनी पाँच शक्तियां परमधाम से दुनियां में उतारी हैं । जबराईल अक्षरातीत श्री राज जी महाराज की जोश की शक्ति है जो हमेशा वाणी को रोशन करती है।

Nijanand App

असराफील आइया, नूर मकान से ।
गावत हैं कुरान को, बैठ बीच मोमिनों में ॥६०॥

असराफील अक्षर धाम से आया है और मोमिनों में बैठकर अखण्ड परमधाम की वाणी को गा रहा है ।

करनाइ फूंकन को, देखत है राह हुकम ।
पीठ कूबड़ी करके, बीच सांस ना लेवे दम ॥६१॥

दूसरा सूर फूंकने के लिए पीठ कुबड़ी करके अक्षरातीत श्री राज जी महाराज के हुकम की राह देख रहा है । बीच में सांस भी नहीं ले रहा और सावधानी के साथ हुकम की राह देख रहा है कि हुकम मिले तो खेल को खत्म करूं ।

और हुकम आया हक का, ऊपर करने काम ।
मोमिनों को खेल दिखाए के, पहुंचावे वतन निजधाम ॥६२॥

और श्री राज जी महाराज ने हुकम के स्वरूप को मोमिनों के सब काम करने के लिए और मोमिनों को खेल दिखाकर वापिस परमधाम तक पहुंचाने के लिए भेजा है ।

उतरी रूहें अरस अजीम से, ए सामिल है पांचे ।
सब कारज होवे इन से, एक ठौर होए के ॥६३॥

जो मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) अर्श से उतरे हैं, ये भी उन पांचों में शामिल हैं । पांचों शक्तियां जब एक जगह एक तन में इकट्ठी हो जाएंगी तो सब कार्य सिद्ध हो जाएंगे । जब से ये पांचों शक्तियां एक जगह इकट्ठी हुई, तब से सब कार्य होने लगे ।

ए सब वास्ते मोमिन के, करत हैं सुभान ।
सब सिफत लिखी इनकी, इनको दिया ईमान ॥६४॥

ये सब कृपा श्री राज जी महाराज अपने मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) के लिए कर रहे हैं और संसार के सब ग्रंथों में इन मोमिनों की ही सिफत लिखी है । अब श्री राज जी महाराज ने ही मेहर करके इनको अपने प्रति ईमान बख्शा है ।

भागवत गीता मिने, और वेद वेदान्त ।
सास्त्र इन वास्ते हुआ, हकें करी सब कर खान्त ॥६५॥

गीता, भागवत, वेद-वेदान्त और संसार के सब ग्रंथ इनकी गवाहियां देने के वास्ते ही उतारे गए हैं। श्री राज जी महाराज ने बहुत चाहना करके संसार के सब धर्म ग्रन्थों में मोमिनों की गवाहियां लिखी हैं।

Nijanand App

उपनिषद इन वास्ते, बोलत है अद्वैत ।
सुनत चरचा इनकी, उड़ जात सब द्वैत ॥६६॥

इन मोमिनों के वास्ते ही उपनिषद द्वैत से परे अद्वैत का ज्ञान देते हैं। अद्वैत परमधाम की वाणी कुलजम सरूप को सुनने से सारे संसार का द्वैत कर्मकाण्ड समाप्त हो जाता है ।

वेद कुरान कहेवहीं, सो कह्या वास्ते मोमिन ।
हकीकत मारफत के, द्वार खोल दिये सब इन ॥६७॥

वेद और कुरान में जो कुछ भी कहा है वो सब मोमिनों की सिफत के बारे में कहा है । आप हक श्री राज जी महाराज ने कुलजम सरूप की वाणी लाकर इनके वास्ते ही हकीकत और मारफत के सब द्वार अर्थात् क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के सब भेद खोल दिए हैं ।

पैगाम जो उतरे, सो वास्ते मोमिनों के ।
सब गवाही देवे इनकी, और सिफत कहे ए ॥६८॥

कुरान के अंदर ग्यारहवीं सदी फरदा रोज को कयामत का जाहिर होना और इमाम मेंहदी साहब का आना सब मोमिनों के वास्ते ही श्री राज जी महाराज ने संदेश भिजवाए हैं और उसमें सब मोमिनों की महिमा कही है और वो इनकी गवाही के लिए ही उतारा गया है ।

मुकदमा कयामत का, सो इनों वास्ते होए ।
मुरदे किये जीवते, इनों वास्ते किया सोए ॥६९॥

कयामत का कुल विषय कुरान में मोमिनों की जागनी के समय के लिए ही कहा गया है और परमधाम की आत्माएं जो मुर्दे जीव का संग करके मुर्दे के समान ही हो चुकी थीं। जाग्रत बुध का तारतम ज्ञान इन्हीं के वास्ते ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी लेकर आए ताकि ब्रह्मसृष्टि को क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के भेदों की पहचान हो जाए और इन्हीं के कारण ही संसार के मुरदार जीवों को आठ बहिश्तों में अखण्ड करने की बख्शीश हुई । ये सब मोमिनों के वास्ते ही किया गया था ।

राह जो इसलाम की, पावे सब खलक ।
मेहर बड़ी जो उतरी, सो भेजी इन वास्ते हक ॥७०॥

हकीकत और मारफत की कुलजम स्वरूप की वाणी इन्हीं के वास्ते दीने इसलाम निजानंद सम्प्रदाय में लाकर जाहिर की और इनकी ही कृपा से इस वाणी के द्वारा ही सारे संसार को अखण्ड मुक्ति का ज्ञान मिलेगा । जो इतनी बड़ी मेहर श्री राज जी महाराज ने की, वो अपने मोमिनों के वास्ते ही की ।

Nijanand App

और बाते केती कहों, सब हुआ इन वास्ते ।
सो तुम जाहिर देखोगे, दिल अपनी नजर से ये ॥७१॥

और भी जो कुछ संसार में श्री राज जी महाराज की मेहर हुई है, वो सब मोमिनों के वास्ते ही हुई है और वो सब अब तुम अपने इस तन की नजरों से देखोगे और आपकी आतम इसका अनुभव करेगी।

महामत कहे ए साथ जी, सुनो जिकर सुभान ।
ए सिफत ईमान की, लाल जिनको भई पहिचान ॥७२॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! जो श्री राज जी महाराज ने परमधाम की अखण्ड वाणी में तुम्हारा जिक्र किया है, उसको सुनो। ये बात बड़े ईमान की है। वही इसको सुन सकेंगे, जिनको अपने धाम धनी राज जी महाराज की पहचान हो गई और धनी पर ईमान आ गया है ।

(प्रकरण ६६, चौपाई ३९६७)

चौथा पहर

अब कहूं पोहोर चौथे की, बीतक जो सैयन ।
सो दिल के कानों सुनियो, करत हों रोसन ॥१॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! अब चौथा पहर, जो दोपहर के ३ बजे से सांय ६ बजे तक होता है, उसमें मोमिनों ने अपने धाम धनी श्री प्राणनाथ जी की जिस प्रकार सेवा की, वह बीतक लिखते हैं। उसको अपने दिल के कानों से सुनना ।

इत एक पहर पिउ पौढ़त, आये सेवन को सब साथ ।
जल लोटा भर ल्याइया, छबीलदास अपने हाथ ॥२॥

आप श्री जी बंगला जी में एक पहर १२ से ३ विश्राम करते हैं। फिर ३ बजे सब सेवा करने वाले सुंदरसाथ हाजिर हो जाते हैं। इस समय छबीलदास जल का लोटा भर कर ले आते हैं ।

श्री राज कोगला करत हैं, डारत हैं पीक दान ।
संकर आगे धरत हैं, संग सन्तदास परवान ॥३॥

आप श्री जी पलंग से उठ कर जल से कुल्ला करते हैं और पीक दान में डालते हैं। शंकर और संतदास पीकदान पकड़ कर खड़े हैं ।

Nijanand App